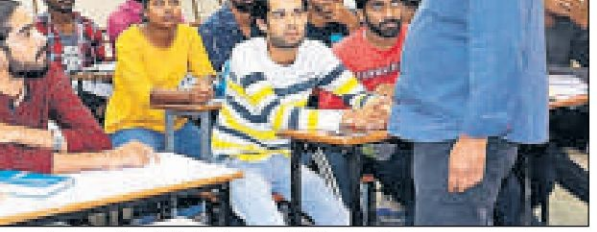

रुवार को नाटक की बारीकियों को समझाते विशेषज्ञ। ● हिन्दुस्तान

है। वर्तमान युग की अपेक्षाओं के अनुसार हमें सामाजिक समस्याओं और जनसंवेदनाओं को केंद्र बनाकर नाटकों की रचना की दिशा में प्रयास करना चाहिए। कार्यशाला के निर्देशक हिन्दी के विभागाध्यक्ष डॉ अनिल कुमार ठाकुर ने बताया कि छठवें दिन उच्चारण से संबंधित बारीकियों को समझाने के लिए डॉ गालिब मजहर को आमंत्रित किया गया है। इस अवसर पर सह निर्देशक अशोक गोप, पुरुषोत्तम कुमार, युगेश कुमार महतो 'जुगनू', सिकन्दर ठाकुर, शीतल छाया किस्पोट्टा, पुनीत सुरीन, संगीता कुमारी, कौशल शर्मा, सौरभ बोस सहित 40 से अधिक छात्र उपस्थित थे।

जापान से विभिन्न विषय में पाएं बैचलर डिग्री

नाम : जैपनीज गवर्नमेंट स्कॉलरशिप फॉर अंडर ग्रेजुएट स्टूडेंट 2020

इनके लिए: जो छात्र यहां से सोशल साइंस समेत अन्य विषय में बैचलर डिग्री करने के इच्छुक हों।

पात्रता : बारहवीं पास हो।

राशि : 1,17,000 जैपनीज येन प्रतिमाह की मदद दी जाएगी।

अंतिम तिथि : 14 जून 2019

वेबसाइट : www.in.emb-japan.go.jp

जयपुर से एमबीए डिग्री करने का मौका

संस्थान : मालवीय नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

कोर्स : एमबीए **कुल सीटें :** 79

योग्यता : प्रथम श्रेणी के अंकों के साथ बैचलर डिग्री प्राप्त हो।

आवेदन शुल्क : पदों के अनुसार 1000 से 2000 रुपये।

चयन : ग्रुप डिस्कशन या इंटरव्यू के माध्यम से किया जाएगा।

ऑनलाइन आवेदन करने की अंतिम तिथि : 06 जून 2019

वेबसाइट : http://mnit.ac.in

ध्यान दें : इस कॉलम के तहत प्रकाशित सूचनाएं विभिन्न स्रोतों से जुटाई जाती हैं। आवेदन करने और शुल्क जमा करने से पहले इसकी पड़ताल कर लें।

'जनजातीय आबादी का सबसे बड़ा केंद्र भारत'

रांची | संवाददाता

रांची में गुरुवार को आदिवासियों की जीवनधारा विषय पर विशेष व्याख्यान में शामिल विशेषज्ञ और वक्तागण। ● हिन्दुस्तान

आदिवासी आबादी दुनिया के लगभग सभी हिस्सों में पाई जाती है। भारत जनजातीय आबादी का सबसे बड़ा केंद्र है। अनुसूचित जनजातियों की कुल जनसंख्या देश की कुल जनसंख्या का 8.2 प्रतिशत है। आजीविका के दृष्टिकोण की महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह लोगों की संपत्ति (भौतिक, प्राकृतिक, वित्तीय, मानवीय, सामाजिक और राजनीतिक) राजधानियों पर केंद्रित है।

ये बातें आईआरटीडीएम विभाग, रामकृष्ण मिशन विवेकानंद शैक्षिक और अनुसंधान संस्थान (सैम विवि) के डॉ दीपांकर चटर्जी ने कही। वे गुरुवार को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय केंद्र रांची की ओर से आयोजित भारतीय आदिवासियों की जीवन धारा एवं संस्कृति : आजीविका के दृष्टिकोण से झारखंड के परिप्रेक्ष्य में विषय पर व्याख्यान दे रहे थे।

कार्यक्रम रामकृष्ण मिशन आश्रम में आयोजित की गयी थी। उन्होंने विभिन्न देशों की संस्कृति, जनजातियों की जीविका एवं उनके रहन-सहन के बारे में बताया।

डॉ चटर्जी ने प्रेजेंटेशन के माध्यम से विभिन्न जनजातियां जैसे गोंड, भील, संथाल, सौरा पहाड़िया, टोटो, सिद्दी, नागा, अंडमानी, इरुला, चेंचू, गारो और जारवा के बारे में बताया। उन्होंने एक प्रजाति के बारे में विस्तार से बताया, जिसे घुमंतू के नाम से जाना जाता है। यह एक स्थान से दूसरे स्थान पर ठिकाना बनाकर जीवन यापन करते हैं। बताया कि ठंड के दिनों में यह प्रजाति पंजाब के गुरुदासपुर नमक गांव में रहते हैं। व्याख्यान की अध्यक्षता कर रहे रामकृष्ण आश्रम के स्वामी भावेशानंद ने कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए आयोजकों को बधाई दी। इंदिरा गांधी कला केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ अजय कुमार मिश्रा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

the pioneer
RANCHI | FRIDAY | MAY 31, 2019

IGNCA holds lecture on Anthropology and Tribes of India: Livelihood Perspectives

PNS ■ RANCHI

A lecture on the topic 'Anthropology and Tribes of India: Livelihood Perspectives' was organised by Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), Regional Centre Ranchi in collaboration with Ramakrishna Mission Ashrama, Ranchi on May 30at Ramkrishna Mission Ashrama auditorium. Dr. Dipankar Chatterjee Head, Department of IRTDM, Ramakrishna Mission Vivekananda Educational and Research Institute (Deemed University) was the speaker where as the session was chaired by Swami Bhaveshananda, Secretary, Ramakrishna Mission Ashrama.

The lecture was organized under the guidance and supervision of Dr. Ajay Kumar Mishra, Regional Director, IGNCA, Regional Centre Ranchi. Eminent guests including Dr. Ajit Singh, scientist Divyan and Dr. Harendra Sinha former Deputy secretary, Department of Culture, Government of Jharkhand graced the occasion.

Chatterjee presented a very informative lecture regarding the livelihood of various tribes and their anthropological study. He spoke about the tribal population which is found in

almost all parts of the world. India has the largest concentration of tribal population. The total population of scheduled tribes accounts for 8.2 per cent of the total population of the country. The primary means of understanding their situation has been through the rubric of deprivation-social, economic, political, cultural and institutional. While this approach continues to be useful, it runs the danger of reducing the subject of its study to merely the victims of the larger processes.

Sustainable Livelihoods approach recognises the importance of ability to access resources and entitlements, reduce risk and vulnerability, and exercise voice. It, therefore, emphasises that the poor do have assets, options and strategies, and that they are decision takers. One of the important features of livelihoods approach is that it focuses upon people's assets (physical, natural, financial, human, social and political capitals). It also looks at how people utilize these assets and negotiate their problems. The lecture focused on the method of analysing livelihood system of the tribal communities in terms of assets rather than a problem.

The lecture was elaborated with reference to certain tribes namely, Gond, Bhil, Santhal, Saura Paharia, Toto, Siddi, Naga, Andamanese, Irula, Chenchu, Garo and Jarwa, Chatterjee specifically detailed about the transhumant Gujars of Himachal Pradesh who rear Oxen and lead a shifting lifestyle. The racial classification, shifting cultivation, economic classification, regional and linguistic distribution of the tribes were also discussed.

कार, धनबाद
सं० 04/वर्ष 2019–20

डल/नगर निवेशन/भवन का कार्यालय।
4:00 बजे अपराहन् तक।
कार्यालय,झमाडा, धनबाद, समय 3:30
बजे।

ण विपत्र मूल्य	अग्रधन की राशि	कार्य समाप्ति की

ई–प्रोक्योरमेंट सेल
अधीक्षण अभियंता का कार्यालय,
भवन निर्माण विभाग,भवन अंचल, हजारीबाग
अति अल्पकालीन ई–प्रोक्योरमेंट नोटिस
ई–टेन्डर रेफरेन्स नं०–BCHZB/Dhanbad/02/2019-20
दिनांकः– 30.05.2019

1.	कार्य का नाम	Renovation of Community Health Centre Jharia Jorapokhar (Chasnala) under Jharia Block Distt. Dhanbad
2.	प्राक्कलित राशि (रू०)	Rs. 87,62,020/- (सतासी लाख बासठ हजार बीस) मात्र।

रामकृष्ण मिशन आश्रम सभागार में परिचर्चा, डॉ दीपांकर चटर्जी ने कहा

आदिवासी समाज पर्यावरण संरक्षण को लेकर एकजुट है

लाइफ रिपोर्टर @ रांची

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र क्षेत्रीय शाखा की ओर से गुरुवार को परिचर्चा हुई. रामकृष्ण मिशन आश्रम सभागार में आयोजित परिचर्चा में भारतीय आदिवासियों की जीवन धारा व संस्कृति : आजीविका के दृष्टिकोण से (झारखंड के परिपेक्ष्य में) पर चर्चा हुई. मुख्य वक्ता डॉ दीपांकर चटर्जी ने कहा कि आदिवासी समाज प्रकृति प्रेमी होने के साथ-साथ पर्यावरण के संरक्षण के लिए एकजुट होता है. वर्तमान में जितने भी वन या पेड़-पौधे दिखायी दे रहे हैं, ये उनके प्रयास का ही परिणाम है. बताया कि आदिवासी आबादी दुनिया के लगभग सभी हिस्सों में उपलब्ध है. इनमें से भारत जनजातीय आबादी का सबसे बड़ा केंद्र है. वहीं अनुसूचित जनजातियों की कुल जनसंख्या देश की कुल जनसंख्या का 8.2 प्रतिशत है.

आदिवासियों की आजीविका को आगे बढ़ाने में उनकी संपत्ति बहुमूल्य योगदान निभाती है. यह संपत्ति आदिवासियों की प्राकृतिक, भौतिक, वित्तीय, मानवीय, सामाजिक और राजनीतिक परिवेश को प्रभावित करती है. ऐसे में इनका इस्तेमाल भोजन सामग्री के उत्पादन में, जीविका के निर्वाह के लिए समेत अन्य कारणों में इस्तेमाल करते हैं. वहीं प्राकृतिक आपदाएं जैसे सूखा और बाढ़ इन्हें प्रभावित करते हैं.

जनजातियों के विकास पर चर्चा

परिचर्चा के दौरान प्रेजेंटेशन के माध्यम से देश के विभिन्न जनजातियों और उनके विकास दर चर्चा की गयी. डॉ दीपांकर ने गोंड, भील, संथाल, सौरा पहाड़िया, टोटो, सिद्दी, नागा, अंडमानी, इरुला, चेंचु, गारो और जारवा जैसी जनजातियों के रहन-सहन, खान-पान और जीविका के लिए इस्तेमाल होनेवाले कारकों पर चर्चा कर लोगों को जागरूक किया. डॉ दीपांकर ने घुमंतू जनजाति की विस्तृत जानकारी दी. बताया कि यह जनजाति सालों भर एक स्थान से दूसरे स्थान अपना ठिकाना बनाती है. ऐसे में गर्मी के दिनों में ऊंची पहाड़ी की पनाह लेते हैं, वहीं ठंड के दिनों में पंजाब के गांवों को अपना ठिकाना बनाते हैं. इससे स्थानीय लोगों को भी लाभ मिलता है. घुमंतू जनजाति के लोगों के पास जानवर होते हैं, इससे दूसरों को खाद और दूध मिल जाता है.

जानकारी बढ़ने से जिम्मेदारी का होता है अहसास : स्वामी

रामकृष्ण मिशन आश्रम के सचिव स्वामी भवेशानंद ने कहा कि जानकारी बढ़ने से लोगों में नयी ऊर्जा का प्रभाव होता है. इससे जागरूकता भी बढ़ती है साथ ही जिम्मेदारी का अहसास भी होता है. परिचर्चा के दौरान आइजीएनसीए के सचिव डॉ सच्चिदानंद जोशी, डॉ अजीत सिंह, डॉ हरेंद्र प्रसाद सिन्हा, डॉ अजय कुमार मिश्रा आदि उपस्थित थे. कार्यक्रम का संचालन राकेश कुमार पांडेय ने किया.

रामकृष्ण मिशन आश्रम सभागार में आयोजित परिचर्चा में शामिल लोग.

विश्व में जनजातीय आबादी का सबसे बड़ा केंद्र है भारत : डॉ. चटर्जी

रांची। संस्थागत आउटरीच के माध्यम से स्थिरता, समावेशिता और एकीकृत विकास की दृष्टि आईजीएनसीए की कड़ी रही है और इसके दूरदर्शी सदस्य सचिव, डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने हमेशा संस्था की मूल विचारधारा को क्रियान्वित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसको ध्यान में रखते हुए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय केंद्र रांची तथा रांची विश्वविद्यालय एवं रामकृष्ण मिशन आश्रम के सहयोग से विवेकानंद सभागार, रामकृष्णमिशन आश्रम, मोराबादी में 30 मई को पूर्वाहन 11 बजे से भारतीय आदिवासियों की जीवन धारा एवं संस्कृति आजीविका के दृष्टिकोण से झारखण्ड के परिप्रेक्ष्य में विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। आई.आर.टी.डी.एम विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. दीपांकर चटर्जी, रामकृष्ण मिशन विवेकानंद शैक्षिक और अनुसंधान संस्थान व्याख्यान सत्र के मुख्य वक्ता थे। व्याख्यान की अध्यक्षता रामकृष्ण मिशन आश्रम के सचिव स्वामी भावेशानंद ने की। डॉ अजित सिंह वैज्ञानिक, दिव्यान कृषि विज्ञानं केंद्र के वैज्ञानिक डॉ अजित सिंह, कला एवं संस्कृत विभाग के पूर्व उप निदेशक डॉ. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा व झारखण्ड सरकार विशिष्ट आतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ

सभी छाया : राजकुमार

रामकृष्ण मिशन के वैदिक पंडितों के द्वारा वैदिक मन्त्रों से हुआ। कार्यक्रम का आयोजन आईजीएनसीए, क्षेत्रीय केंद्र रांची के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अजय कुमार मिश्रा की देखरेख और मार्गदर्शन में किया गया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में डॉ अजीत सिंह ने लोगो का स्वागत किया। इस मौके पर मुख्य वक्ता डॉ चटर्जी ने विस्तार पूर्वक व्याख्यान विषय पर प्रेजेंटेशन के माध्यम से लोगो को विभिन्न देशो की संस्कृति, उनकी जीविका एवं उनके रहन–सहन के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि आदिवासी आबादी दुनिया के लगभग सभी हिस्सों में पाई जाती है। भारत जनजातीय आबादी का सबसे बड़ा केंद्र है। अनुसूचित जनजा. तियों की कुल जनसंख्या देश की कुल जनसंख्या का 8.2 प्रतिशत है। आजीविका के दृष्टिकोण की महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह लोगों की संपत्ति भौतिक, प्राकृतिक, वित्तीय, मानवीय, सामाजिक और राजनी. तिक राजधानियों पर केंद्रित है एवं लोग इन परिसंपत्तियों का उपयोग किस प्रकार से करते हैं और उनकी समस्याओं पर भी बातचीत की गई। डॉ चटर्जी ने प्रेजेंटेशन के माध्यम से विभिन्न जनजातियां जैसे गोंड, भील, संथाल, सौरा पहाड़िया, टोटो, सिद्दी, नागा, अंडमानी, इरुला, चेंचू, गारो और जारवा के बारे में बताया जिनमे उन्होंने एक प्रजाति के बारे में विस्तार से बताया जिसे घुमंतू के नाम से जाना जाता है जो कई किलोमीटर पैदल अपने सैकड़ों जीव जन्तुओं के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान चलते रहते है जिनका कोई ठिकाना नहीं होता। ठण्ड में वह पंजाब के गुरुदासपुर नमक गांव में जाकर रहते है, जहां पर इनको वहां के गांव वाले पनाह देते है। पनाह देने का कारण भी यह है कि इतने सारे जीव जंतुओं के मॉल से गांव वालो को खाद प्राप्त हो जाता है और दूध भी। गर्मी होने पर ऊंचे पहाड़ो की तरफ अपना डेरा खोजते है और चलते रहते है। इनके चलने की प्रक्रिया तय होती है। जहां वे रुक कर पशुओं को खाना खिला सके एवं अपने परिवार का भी खान पान का ध्यान रख सके। सत्र काफी लाभप्रद रहा और व्याख्यान में उपस्थित लोगो ने उत्साह के साथ भाग लेकर अपनी रुचि दिखाई। व्याख्यान के अध्यक्षता कर रहे स्वामी भावेशानंद ने सत्र की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त की और इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए आईजीएनसीए, क्षेत्रीय केंद्र रांची को भी बधाई दी। उन्होंने यह भी बताया की यह व्याख्यान काफी लोगो के लिए लाभप्रद रहा। उन्होंने इस तरह के आयोजन के लिए परस्पर सहयोग देने की चेष्ठा जताई। उन्होंने मुख्य वक्ता को इस व्याख्यान को सहेज कर प्रेजेंटेशन के माध्यम से दिखा कर एवं उपयुक्त जानका. रियां देने के लिए धन्यवाद दिया। यह एक सूचनात्मक और सफल सत्र था। कार्यक्रम का संचालन राकेश कुमार पाण्डेय ने किया।

AAJ Ranchi-31-05-2019